Roll No. ------------------

**MASL-204**

**नाटक एवं नाटिका**

MA Sanskrit(MASL)

2ndYear, Examination 2024 (Dec.)

**TIME: 2 Hours Max Marks: 70**

नोट : यह प्रश्‍नपत्र सत्‍तर (70) अंकों का है जो दो (02) खण्‍डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्‍येक खण्‍ड में दिए गए विस्‍तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्‍नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्‍नों के उत्‍तर दी गई उत्‍तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्‍त (बी) उत्‍तर पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

**खण्‍ड -क**

 **(दीर्घ उत्‍तरों वाले प्रश्‍न)**

**नोट : खण्‍ड 'क' में पॉच (05) दीर्घ उत्‍तरों वाले प्रश्‍न दिये गये हैं, प्रत्‍येक प्रश्‍न के लिए उन्‍नीस (19) अंक निर्धारित हैं । शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02)प्रश्‍नों के उत्‍तर देने हैं । (2×19=38)**

1. शूद्रक की काव्‍यकला पर प्रकाश डालिए ।

2. ‘मृच्छकटिकम्’ के आधार पर वसन्तसेना का चरित्र-चित्रण कीजिये।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो श्‍लोंकों की व्याख्या कीजिए-

(क) पर्यंकग्रन्थिबन्‍धद्विगुणितभुजगाश्‍लेषसंवीतजानो-

 रन्‍त: प्राणावरोधव्‍युपरतसकलज्ञानरूद्धेन्द्रियस्‍य ।

 आत्‍मन्‍यात्‍मानमेव व्‍यपगतकरणं पश्‍यतस्‍तत्त्वदृष्‍टया

शम्‍भोर्व: पातु शून्‍येक्षणघटितलयब्रह्मलग्‍न: समाधि: ।।

(ख) सत्यं न मे विभवनाषकृतास्ति चिन्ता

भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।

एतत्‍तु मां दहति नष्टधनाश्रयस्य

यत्सौहृदादपि जनाः शिथिली भवन्ति।

(ग) आलोक विशाला मे सहसा तिमिरप्रवेशविच्छिन्न।

उन्मीलितापि दृष्टिर्निमीलितेवान्धकारेण।।

(घ) त्रेताहृतसर्वस्वः पावरपतनाच्च शोषित शरीरः।

नर्दित दर्शित मार्गः करेन विनिपातितो यामि।।

4. ‘रत्नावली’ नाटिका के प्रथम अंक का साहित्यिक वैशिष्‍टय अपने शब्‍दों में लिखिए।

5. नाट्य साहित्‍य के उद्भव पर प्रकाश डालिये ।

**खण्ड – ख**

**लघु उत्तरों वाले प्रश्न**

**नोट : खण्‍ड ‘ख’ में आठ (08) लघु उत्‍तरों वाले प्रश्‍न दिये गये हैं, प्रत्‍येक प्रश्‍न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्‍नों के उत्‍तर देने हैं। (4×8=32)**

1. चारूदत्‍त के सैद्धान्तिक पक्षों का निरूपण कीजिए ।
2. निम्नलिखित श्‍लोकों का हिन्दी अनुवाद कीजिए-

(क) य: कश्‍चत्‍वरितगतिर्नि‍रीक्षतेमां

सम्‍भ्रान्‍तं द्रुतमुपसर्पति स्थि‍तं वा ।

तं सर्व तुलयति दूषितोऽन्‍तरात्‍मा

स्‍वैर्दोषैर्भवति हि शडि़्कतो मनुष्‍य: ।।

(ख) औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्तमाना ह्रिया

तैस्तैर्बन्धुवधूजनस्य वचनैर्नीताभिमुख्यं पुनः।

दृष्टवाग्रे वरमात्तसाध्वसरसा गौरी नवे संगमे

संरोहत्पुलका हरेण हसता श्लिष्टा शिवायाऽस्तु वः।।

1. शूद्रक कवि का परिचय दीजिए।
2. विदूषक का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
3. मृच्‍छकटिकम् के प्रतिनायक का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
4. मृच्‍छकटिकम् में वर्णित सामाजिक दशा का वर्णन कीजिए ।
5. ‘रत्नावली’ नाटिका के आधार पर वसन्तसेना का चरित्र-चित्रण कीजिये।
6. ‘रत्नावली’ के द्वितीय अंक का सारांश अपने शब्दों में लिखिये।